दैनिक जागरण www.dainikjagranmpcg.com भोपाल, 29 मार्च 2025

सत्यकथा

मेरठः सेक्स, ड्रग्स और तंत्र-मंत्र के जहरीले कॉकटेल की चर्चित कहानी

जरूरी क्या ? रूहानी मोहब्बत या जिस्मानी जरूरत

मेरठ का सौरभ राजपूत हत्याकांड इस बात का सबूत है कि स्त्री हो या पुरुष दोनों के लिए जिस्मानी जरूरत की पूर्ति रूहानी प्यार से कहीं अधिक जरूरी है। क्योंकि जिस्म अपनी जरूरत पूरी करने नया साथी खोजने में देर नहीं करता।

डॉ. देवेन्द्र साहू

17 मार्च की शाम के कोई 7 बजे का वक्त था जब मेरठ के इन्द्रानगर इलाके में रहने वाले रस्तोगी दंपति के दरवाजे की कॉल बेल गूंज उठी। इस मकान में पति प्रमोद रस्तोगी अपनी पत्नी कविता रस्तोगी के साथ अकेले रहते हैं। इस दंपति की तीन संतान हैं जिनमें से सबसे बड़ी सरिता (बदला नाम)की शादी हो चुकी है जबकि एक बेटा और बेटी अभी दिल्ली के एक कॉलेज में पढ़ रहे हैं। इसलिए फिलहाल दोनों पति-पत्नी इस मकान में अकेले रहते हैं। हां कुछ दिनों से जरूर इस घर में छह साल की एक छोटी सी बच्ची की चहल-कदमी का शोर सुनाई दे रहा था। यह बच्ची इस दंपति की बड़ी बेटी की संतान है जो अपने पापा-मम्मी के शिमला घूमने जाने के दौरान यहां नाना-नानी के साथ रह रही थी। घंटी की आवाज सुनकर कविता रस्तोगी ने दरवाजा खोला सो सामने खड़ी अपनी बेटी सरिता को देखकर चौंकते हुए बोली- अरे तू कब वापस आ गई शिमला से।

आज ही शाम को पहुंचे हैं।

दामाद जी नहीं आए साथ, दरवाजे पर खड़ी सरिता के पीछे झांकने की कोशिश करते हुए मां ने पूछा।

नहीं वो थके थे इसलिए आते ही सो गए।

मां-बेटी दरवाजे पर खड़ी होकर यह बातें कर ही रहीं थी कि तभी अंदर नाना के साथ खेल रही सरिता की बेटी ने जब अपनी मां की आवाज सुनी तो दौड़ती हुए आकर मां से लिपट गई।

आ अंदर आ। कैसी रही तेरी यात्रा? तुम दोनों में झगड़ा तो नहीं हुआ न?

नहीं मां, बहुत अच्छा रहा सब कुछ। सरिता ने मां को बताया इसी बीच उसकी बेटी पापा से मिलने की जिद करने लगी। सरिता ने उसे किसी तरह समझाया फिर लगभग घंटे भर माता-पिता के साथ बातें करने के बाद वह अपने घर जाने के लिए उठी तो उसकी बेटी भी साथ चलने की जिद करने लगी। सरिता ने मना किया तो उसके पिता बोले ले जा इसको अपने पापा से मिलने की जिद कर रही है।

नहीं पापा अभी तो इसके एक्जाम भी हो चुके है इसे यही रखो।

हम कब इसको रखने से मना कर रहे हैं। बल्कि हमें तो इसके साथ वक्त का पता ही नहीं चलता। लेकिन बेटी को पापा से मिलना है तो ले जा कल फिर हम खुद तेरे घर आकर इसे अपने साथ ले आएंगे। पिता का कहना गलत नहीं था लेकिन सरिता यह कहते हुए अकेले की वापस चली गई कि वो कल सौरभ को लेकर सुबह आयेगी। लेकिन दूसरे दिन न सौरभ आया और न सरिता तो मां ने सरिता को फोन लगाकर पूछा सौरभ कहां है बेटी से बात करवा दो।

वो सो रहे हैं मम्मी अभी जागेंगे तो बात करवा दूंगी। सामने सरिता ने जबाव दिया तो कविता अपनी बेटी पर फूट पड़ी और लगभग डांटते हुए बोली क्या मजाक बना रखा है तुम दोनों ने। तुम दोनों 4 मार्च को घूमने निकले थे तब से लेकर अब तक मैंने खुद दर्जनों बार तुझसे सौरभ से बात करवाने को कहा लेकिन तूने उससे एक शेष पृष्ठ 4 पर...

आरोपी प्रेमी साहिल, तथा मृतक की आरोपी पत्नी (ऊपर)।

मृतक सौरभ।

ईडन गार्डन का वर्जित-फल खाने पर स्वर्ग से निकाल गए आदम और हब्बा की संतानें आज भी उस वर्जित-फल की सजा भोग रहें है। फल के रस का स्वाद चख चुके युवक-युवती का इस सुख की उपलब्धता से वंचित रहना सौरभ हत्याकांड जैसी कहानी की जड़ है। क्योंकि शादीशुदा जोड़ों में एक दूसरे से दूर रहने का दर्द, इस वर्जित-फल के सुख से जुड़ी सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ देने से कही अधिक कठिन होता है परिणाम स्वरूप सरिता और साहिल जैसे अनैतिक आदम-हब्बा जन्म लेते हैं जिनके गर्भ से अपराधों का जन्म होता रहा है, हो रहा है और आगे भी होता रहेगा, ऐसी संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

खाचरोद

कब्र की चोरी

डोडिया का कचरू चन्द्रवंशी का चरित्र उसके नाम कचरू से भी अधिक रहस्यमयी था। इसलिए गांव के कब्रिस्तान से चोरी हुए दो साल पुराने शव की गुत्थी सुलझाने में पुलिस को ज्यादा समय नहीं लगा।

तांत्रिक क्रिया की मदद से करोड़पति बनने और मनचाहा प्यार पाने की नीयत से कचरू ने अपने साथियों के साथ मिलकर शिवरात्रि की रात में कब्र खोदकर शव की चोरी की थी।

श्मशान और कब्रिस्तान जैसे स्थानों पर यह जानते हुए भी कि एक रोज यहां सभी को जाना है, कोई नहीं जाना चाहता। इसलिए जब तक मजबूरी न हो ऐसी जगहों पर आम तौर पर सन्नाटा ही पसरा रहता है। कुछ ऐसा ही हाल 4 मार्च की दोपहर में उज्जैन जिले की खाचरोद तहसील के एक गांव डोडिया स्थित कब्रिस्तान का भी था। लेकिन शाम ढलने से कुछ ही समय पहले एक बकरी चराने वाला कब्रिस्तान से होकर गांव की तरफ वापस जाने गुजरा तो एक पुरानी कब्र के पास लगे ताजी खोदी गई मिट्टी के ढेर को देखकर वह चौंक गया। उसने नजदीक जाकर देखा तो पाया कि एक पुरानी कब्र खुदी पड़ी है। युवक को माजरा समझने में देर नहीं लगी इसलिए जैसे ही डोडिया गांव के मुस्लिम समाज को इस बात की जानकारी लगी वे कब्रिस्तान पहुंच गए। जिस कब्र को खोदा गया था वह लगभग दो साल पुरानी थी जिसके अंदर दफन व्यक्ति का शव कब्र से गायब था।

कब्र से मुर्दा चोरी किए जाने की बात लेकर जब समाज के लोग चांपाखेड़ा पुलिस चौकी प्रभारी शांतिलाल मौर्य के पास पहुंचे तो उन्होंने इस घटना की जानकारी तत्काल ही अपने थाना खाचरौद के टीआई धनसिंह नलवाय को दी और खुद दलबल लेकर मौके पर पहुंच गए। थोड़ी देर में सूरज डूबने से पहले टीआई श्री नलवाय भी डोडिया पहुंचे और चोरों का शिकार बनी कब्र के बारे में जानकारी जुटाने के बाद आसपास शव की तलाश की जिसमें कुछ दूरी पर शव का कफन और थोड़ी और दूरी पर पैर के पंजे की हड्डी पड़ी मिली जिसे पुलिस ने बरामद कर लिया।

जिस कब्र से मुर्दा चोरी किया गया था उसके पास पूजा का सामान, कटा नीबू और अन्य तांत्रिक वस्तुएं पड़ी थी। जिससे साफ था कि चोरों ने कब्र से मुर्दा चोरी करने से पहले वहां पूजा पाठ किया था। कब्र से खोदी गई मिट्टी तेज धूप के कारण पूरी तरह से सूख चुकी थी इससे यह भी अनुमान लगाया कि कब्र को कम से कम पांच-सात दिन पहले खोदा गया है। कब्र से मुर्दा चोरी की बात सामने आने पर एसपी उज्जैन प्रदीप शर्मा ने एसडीओपी खाचरोद पुष्पा प्रजापति के नेतृत्व में टीआई धनसिंह नलवाय और चौकी प्रभारी शांतिलाल मौर्य की एक टीम गठित कर दी। इस टीम से सर्वप्रथम कब्रिस्तान से कुछ ही दूरी पर स्थित मस्जिद के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज चेक किए जिसमें शिवरात्रि से एक रोज पहले गांव में दो अजनबी युवक दाखिल होते दिखाई दिए।

प्रदीप शर्मा, एसपी

पुलिस ने जब इन युवकों के बारे में जानकारी जुटाई तो पता चला कि इन दोनों ने उस रोज गांव में दाखिल होने के बाद कई लोगों से कचरू चंद्रवंशी नाम के युवक के घर के रास्ते के बारे में पूछताछ की थी। जिसमें कचरू के तंत्र-मंत्र से जुड़े होने की जानकारी लगते ही एसडीओपी सुश्री प्रजापति समझ गई कि ऑपरेशन अंजाम तक पहुंच चुका है। इसलिए उन्होंने एक टीम के साथ तत्काल छापामारी कर डोडिया से कचरू को हिरासत में ले लिया।

उज्जैन से अशोक त्रिपाठी

पूछताछ के दौरान कचरू पहले तो कब्र से मुर्दा चोरी के मामले में अपना हाथ होने से इंकार करता रहा लेकिन जब पुलिस ने उससे सख्ती की तो कचरू ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए अन्य दोनों आरोपियों के बारे में बता दिया जिन्हें राजस्थान के बांसवाड़ा से इस काम के लिए बुलाया गया था। जिसके बाद पुलिस ने उनके पास से कब्र खोदने के औजार और तंत्र क्रिया में काम आने वाली सामग्री जब्त कर तीनों को अदालत में पेश किया जहां से उनको जेल भेज देने के बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

दूसरी कब्र खोदने के मिली सफलता

टीआई श्री नलवाय के अनुसार आरोपियों ने पहले एक अन्य कब्र से मुर्दा चुराने की कोशिश की थी। लेकिन उसे खोदने में सफलता न मिलने पर पास की दो साल पुरानी कब्र को अपना निशाना बनाया। मुर्दा चुराने के लिए उन्होने कब्र के ऊपर से पटिए हटाकर पैरों की तरफ से कंकाल को पकड़कर बाहर निकाला था।

खाचरौद थाने की चांपाखेड़ा चौकी की सीमा में बसे गांव डोडिया निवासी कचरू चन्द्रवंशी बचपन से ही शातिर दिमाग था। बताया जाता है कि बचपन में वह अक्सर कचरे के ढेर में खेलता था इसलिए गांव वालों ने उसे कचरू कहकर बुलाना शुरू कर दिया जो आगे जाकर उसका नाम बन गया।

बताते है कि तंत्र-मंत्र में रुचि होने के कारण कचरू कई साल पहले गांव से भाग गया था। इसके लगभग दो साल बाद जब वह गांव लौटा तो उसने खुद को तांत्रिक बताना शुरू कर दिया। उसका कहना था कि दो साल पहले एक बड़े तांत्रिक महाराज उसे अपने साथ जंगल ले गए थे। वहीं उन्होंने मुझे तंत्र-मंत्र की शिक्षा दी जिसे सीखने के बाद उन्होंने मुझे गांव में जाकर अपने तंत्र-मंत्र से लोगों की सेवा करने का आदेश दिया जिसके चलते वह गांव वालों की सेवा करने वापस आया है।

पुष्पा प्रजापति
एसडीओपी

धनसिंह नलवाया
टीआई

कुछ ही समय में उसकी दुकान जम गई तो उसने आसपास के इलाके में अपना बाजार फैलाना शुरू कर दिया। घटना के बारे में उसने बताया कि कुछ दिन पहले उसके पास राजस्थान का एक आदमी अपनी समस्या को लेकर आया था। दरअसल वह आदमी अपनी साली से प्यार करने लगा था लेकिन साली किसी और से प्यार करती थी। आदमी मालदार था इसलिए कचरू ने उसे बड़ी पूजा बताने की बात कहकर कुछ दिनों के बाद बुलाया।

जब वह आदमी फिर कचरू के पास आया तो बताया जाता है कि कचरू ने उससे दो लाख रुपए खर्च की बात कही। उसका कहना था कि इस काम के लिए उसे एक मुर्दा चाहिए पड़ेगा जिसके लिए और आदमियों की जरूरत पड़ेगी इसलिए खर्च ज्यादा होगा।

व्यक्ति अपनी साली को हर हाल में पाना चाहता था इसलिए उसने कचरू से पूजा करने को कहा। जिसके बाद योजना अनुसार शिवरात्रि को तंत्र क्रिया में मुर्दा की व्यवस्था करने कचरू ने राजस्थान के बांसवाड़ा से अपने दो परिचितों को डोडिया बुलाकर अगले दिन आधी रात को कब्रिस्तान से मुर्दा निकालकर ले गया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

करोड़पति बनने के लिए की तंत्र क्रिया

पुलिस के अनुसार कचरू ने रातों रात करोड़पति बनने के लिए यह अपराध किया है। जबकि सूत्रों के अनुसार बताया जा रहा है कि कचरू ने यह

मुर्दा चोरी एक व्यक्ति के लिए तंत्र क्रिया करने की थी जो अपनी साली का दिल जीतना चाहता था। गांव वालों के अनुसार कचरू कुछ साल पहले गांव से लापता हो गया था। इसके बाद जब वह गांव में वापस आया तो खुद को काला जादूगर बताकर लोगों को पूजा के नाम पर ठगने लगा था।

कब्रिस्तान में खोदी गई कब्र तथा अक्रोशित लोग।

गुना

शादी के बाद विदा होकर ससुराल जा रही प्रेमिका को रास्ते से ले भागा पुराना आशिक

फेरे तेरे बीवी मेरी

विदाई के बाद ससुराल की चौखट पर पहुंचने से पहले आशिक द्वारा अपहरण कर ले जाई गई दुल्हन को पुलिस ने प्रेमी द्वारा सजाकर रखी गई सुहाग की सेज पर पहुंचने से पहले बरामद तो कर लिया लेकिन अब सवाल यह है कि क्या सजनी के साथ सात फेरे लेने वाली उसका पति अब दुल्हन को स्वीकार करेगा?

ध्या न से सुन, शादी तेरी होगी मगर सुहागरात मेरी। और हां तुझे आज छोड़ रहा हूं, आगे हमारे बीच आया तो तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा। कहते उन सात में से एक युवक ने दुल्हन को गोद में उठाकर अपनी स्कार्पियो में बैठाया और बाकी के छह साथियों के संग देखते ही देखते आंखों से ओझल हो गया।

यह वाकया 2 मार्च की सुबह लगभग साढे दस बजे गुना जिले के धरनावदा थाने की रुठयाई चौकी की सीमा होकर गुजरने वाले नेशनल राजमार्ग पर उस समय घटित हुआ जब राजस्थान के सवाई माधोपुर का रहने वाला विक्रम बंजारा अशोक नगर जिले के राजीखेड़ा गांव में कल हुई अपनी शादी के बाद दुल्हन सजनी(बदला नाम)को विदा करवा कर फूलों से सजी कार में बैठाकर घर ने जा रहा था।

हजारों-हजार अरमानों के साथ दुल्हन को लेकर जा रहे किसी भी युवक के लिए यह वाकया किसी सदमे से कम नहीं था। संयोग से बंजारा समाज के एक रिवाज के चलते दुल्हन की मौसी और दादी भी इसी कार में दूल्हा दुल्हन के साथ सवार थीं जिन्होंने दूल्हे विक्रम को जल्द से जल्द दुल्हन का अपहरण कर लिए जाने की खबर रुठयाई पुलिस चौकी में देने को कहा।

लेकिन जिस दूल्हे ने तो अभी तक ठीक से अपनी दुल्हन का चेहरा भी न देखा हो वह अंजान रास्ते पर घने जंगल से निकलकर पुलिस चौकी तक पहुंचने का रास्ता कैसे जान सकता था। फिर बदमाश दुल्हन को ले जाने से पहले दूल्हे की कार के चारों टायर चाकू से फाड़कर पंक्चर भी तो कर गए थे। इसलिए दूल्हा कार के पीछे आ रही अपनी बारात से भरी बस के वहां पहुंचने का इंतजार करने लगा। इसके कुछ समय बाद बस पहुंचने पर जब बारातियों को दुल्हन का अपहरण कर लिए जाने की जानकारी लगी तो बाराती पूरी बस लेकर रुठयाई पुलिस चौकी पहुंच गए। जहां धरनावदा थाना टीआई प्रभात कटारे को मामले की जानकारी लगने पर एसपी संजीव सिंहा के निर्देश पर एसडीओपी राघौगढ़ दीपा डुडवे के नेतृत्व में तत्काल तीन पुलिस टीम काली स्कार्पियो गाड़ी की तलाश में सड़कों पर उतर गई। इस बीच स्कार्पियो के रजिस्ट्रेशन नंबर की मदद से जब उसके मालिक से संपर्क किया गया तो उसने बताया कि उक्त कार को आकाश नाम का एक युवक किराये पर लेकर गया है। संयोग से स्कार्पियों में जीपीएस लगा हुआ था इसलिए जीपीएस के माध्यम से मालिक ने पुलिस को जानकारी दी की गाड़ी इंदौर के तरफ आ रही है। जिससे गाड़ी मालिक से लगातार जीपीएस पर मिल रही गाड़ी की लोकेशन लेते हुए पुलिस की टीमें स्कार्पियो का पीछा करने लगी।

जल्द ही यह बात दुल्हन को लेकर भाग रही स्कार्पियो में बैठे बदमाशों को समझ में आ गई कि पुलिस उनके पीछे है जिससे वह गाड़ी को देवास पहुंचकर इंदौर की बजाए भोपाल रोड़ पर ले जाकर सड़क किनारे लावारिश छोड़कर फरार हो गए।

पुलिस को गाड़ी खाली मिली तो चारों तरफ पुलिस टीम सक्रिय हो गई चूंकि बदमाशों के साथ एक युवती दुल्हन के रूप में लाल जोड़े में थी इसलिए लोगों की नजरों से उनका बचना कठिन था इसलिए पुलिस ने जल्द ही एक कच्चे रास्ते पर घेराबंदी कर अभिषेक जाटव निवासी खातेगांव, रोहित कदम निवासी मूसाखेड़ी, संजय निवासी शिवनगर, तुषार अहिरवार निवासी शिवनगर और नीरज निहाले निवासी आजाद नगर इंदौर को गिरफ्तार कर दुल्हन सजनी को बरामद कर लिया। जबकि दो मुख्य आरोपी राजा और आकाश भागने में सफल हो गए। इनमें से आकाश वही युवक था जिसका नाम दुल्हन सजनी उस वक्त ले रही थी जब कार को रोककर दुल्हन का अपहरण करने से पहले दूल्हे के साथ मारपीट के दौरान खुद दुल्हन आकाश नाम लेकर उसे दूल्हा के संग मारपीट करने से रोक रही थी।

दुल्हन का अपहरण कर दूल्हे की कार पंचर कर भागे बदमाश।

इसका तो यही अर्थ निकाला जा सकता था कि दुल्हन सजनी अपहरणकर्ता आकाश से पूर्व परिचित थी। लेकिन पुलिस द्वारा बरामद किए जाने के बाद उसने बदमाशों में से किसी को भी पहचानने से इंकार कर दिया। सजनी अपहरण कर्ता को आकाश नाम लेकर बुला रही थी यह बात खुद दूल्हा विक्रम ने पुलिस को बताई थी लेकिन पुलिस दुल्हन पर जबरन दबाव डालकर तो उसे आकाश के परिचित होने की बात स्वीकार नहीं करवा सकती थी। इसलिए दूसरे दिन पुलिस ने अपहरण के सभी आरोपियों को अदालत में पेश किया जहां से उनको जेल भेज देने के बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

दो साल पहले 12 वीं कक्षा पास करने के बाद डॉक्टर बनने उम्मीद में सजनी के पिता ने बेटी के कहने पर उसे कोचिंग के लिए इंदौर भेज दिया। अशोकनगर जिले के छोटे से गांव से इंदौर आई सजनी के लिए बड़े शहर में बिंदास जिंदगी जीना किसी सपने के सच हो जाने की तरह था वह थी भी नाबालिग सो समझ भी इतनी न थी कि जवान खूबसूरत और अकेली रहने वाली लड़की के लिए इंदौर में चारों तरफ मड़राने वाले खतरों से बच कर रहना कितना जरूरी है।

पुलिस गिरफ्त में आरोपी।

पहले भी दो बार हो चुका है दुल्हन का अपहरण

जांच के दौरान सामने आया है कि 2024 के जनवरी और जून महीने में भी दो बार आकाश, सजनी का अपहरण कर

पीड़ित दूल्हा विक्रम सिंह

उसे अपने साथ ले गया था। जून में बात पुलिस तक पहुंचने से आकाश और उसके साथियों के खिलाफ बलात्कार एवं पॉक्सो एक्ट की विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया गया था।

इसलिए नए पंखों को लेकर उड़ रही सजनी की मासूमियत का फायदा उठाकर आकाश बंजारा नाम के युवक ने उसे अपनी छत पर घोंसला बनाने के लिए लुभाना शुरू कर दिया।

सूत्रों की माने तो सजनी जल्द ही आकाश द्वारा डाले गए दाने के चक्कर में पड़कर उसके प्यार के पिंजरे में कैद हो गई। किशोर जिस्म में दौड़ रहे खून को विपरीत लिंग का साथ मिल जाने से उबलने में देर नहीं लगती। यही सजनी के साथ हुआ। आकाश के जाल में फंसकर सजनी पढ़ाई पर ध्यान देने के बजाए इश्क के नए-नए पाठ पढ़ने में खो गई।

जाहिर सी बात है कच्ची उम्र में किसी युवक का संग मिल जाने से किशोरियों के शरीर में तेजी से परिवर्तन आने लगता है। इसलिए जब यह परिवर्तन सजनी की मां और दादी ने सजनी में देखे तो उसे साल भर के बाद ही वापस गांव बुलाकर आगे इंदौर भेजने से मना कर दिया गया।

सजनी को डॉक्टर बनने का सपना टूटने का दुख नहीं था। उसे इंदौर जैसा महानगर और आकाश जैसे प्रेमी का साथ छूट जाने का दुख था। वहीं दूसरी तरफ आकाश भी ऐसी नसमझ किशोरी के वापस घर चले जाने से दुखी था जो प्रेमी के कहने पर उसके सामने किसी भी हद तक समर्पण करने हमेशा राजी रहती थी। बहरहाल दोनों को एक दूसरे के संपर्क में बने रहने के लिए मोबाइल का सहारा तो था ही। शेष पृष्ठ 7 पर...

आकाश इसे मत मारो

बारात लेकर सजनी का ब्याहने आए विक्रम ने पुलिस को बताया था कि जब बदमाशों ने सड़क पर हमारी गाड़ी रोक कर मेरे साथ मारपीट करना शुरू कर दिया तो सजनी एक दो-तीन बार आकाश इसे मत मारो कहा था। लेकिन सजनी का कहना है कि वह किसी बदमाश को नहीं जानती।

शादी तेरी, सुहागरात मेरी

बताया जाता है कि जब आकाश दुल्हन बनी सजनी को गोद में उठाकर उसका अपहरण कर अपने साथ ले जा रहा था तब उसने बच्चों की तरह दूल्हा विक्रम को गाल थपथपाते हुए कहा था कि इसके साथ शादी जरूर तेरी हुई है लेकिन सुहागरात मेरे संग होगी।

...पृष्ठ 1 से जारी

वासना की भूख और काला जादू के अंधविश्वास से जन्मी अनूठी अपराध कथा

...या जिस्मानी आग

ठीक 18 की उम्र में सौरभ के साथ प्रेमविवाह रचाने वाली सरिता शादी से पूर्व दो बार सौरभ के संग घर से भाग चुकी थी।

बार भी बात नहीं करवाई, कभी सो रहा है तो कभी नहा रहा है। जगाकर बोलो उससे बेटी याद कर रही है। मां से डांट का उत्तर देने के बजाए सरिता फोन हाथ में लिए जोर-जोर से रोने लगी। बेटी को रोते देख कविता रस्तोगी डर गईं उन्होंने सरिता से कहा तू रो मत मैं ओर तेरे पापा आ रहे हैं वहीं।

नहीं मां आप लोग यहां मत आओ मैं ही वहां आती हूं। मां की बात सुनकर सरिता ने कहा तो कविता ने जानना चाहा कि आखिर बात क्या है पति-पत्नी में किसी बात को लेकर विवाद हुआ है या कोई और समस्या है

पति के पैसों पर प्रेमी संग हनीमून

सौरभ की लाश ठिकाने लगाने के बाद सरिता सौरभ के लाए एक लाख रुपए लेकर प्रेमी के साथ शिमला, मनाली घूमने चली गई। शिमला के एक मंदिर में दोनों ने माला पहनाकर आपस में शादी कर ली और दस दिन तक नशे में डूबकर हनीमून मनाते रहे। जिसके बाद जब पैसा खत्म हो गया तो वापस मेरठ आ गए। जांच में सामने आया है कि इसके लिए दोनों ने 54 हजार रुपए में टैक्सी बुक की थी।

लेकिन सरिता घर आकर सब कुछ बताने की बात कहकर फोन काट दिया। सरिता की बात सुनकर उसके माता-पिता चिंता में डूब गए। क्योंकि कुछ समय पहले ही सौरभ ने सरिता से तलाक के लिए अदालत में मामला दर्ज करवाया था लेकिन फिर दोनों में आपसी समझौता होने पर सौरभ ने तलाक का आवेदन वापस ले लिया था। इसके बाद इग्लैंड में नौकरी करने वाला सौरभ पूरे दो साल बाद वापस भारत आया था। ऐसे में दो साल की दूरी से मन में पैदा हुई एक दूसरे की तड़प क्या 12-15 दिन में ही लड़ाई झगड़ने में बदल गई।

थोड़ी देर में सरिता अपने माता-पिता के घर पहुंची जहां उसने रोते हुए बताया कि सौरभ के घर वालों ने उसका कत्ल कर दिया है। सरिता की बात सुनकर उसके माता-पिता बुरी तरह चौंक गए। यह सच है कि सरिता से माता-पिता की मर्जी के खिलाफ प्रेम विवाह करने के बाद सौरभ के परिवार ने उससे रिश्ता तोड़ते हुए अपनी संपति से भी बेदखल कर दिया था। लेकिन वे सौरभ की हत्या नहीं कर सकते। सवाल यह भी था कि आखिर हत्या के समय जब सरिता वहां मौजूद थी तो उसने शोर करके अपने मकान मालिक या पास रहने वाले दूसरे किरायेदार को क्यों नहीं बुलाया। पिता को सरिता की बात पर शक तो था लेकिन बेटी अपने सुहाग की हत्या की बात झूठ क्यों कहेगी इसलिए माता-पिता दोनों सरिता को साथ लेकर ब्रह्मपुरी थाने के लिए रवाना हो गए। संयोग से इसी बीच रास्ते में पिता ने बेटी से पूछा यह कितने बजे की घटना है यह?

3 मार्च की, सरिता ने जबाब दिया तो पिता ने अचानक इतनी तेजी से एक्टिवा का ब्रेक लगाया कि पीछे बेटी मां और सरिता ने किसी तरह खुद को नीचे गिरने से रोका।

क्या बोली तू, 3 मार्च की?

हां।

आज 18 मार्च है, 15 दिन हो गए। फिर इस बीच 4 मार्च से कल 17 तक तो तू सौरभ के साथ शिमला घूमने गई थी। जब सौरभ की हत्या 3 को हो गई तो तू 4 को उसके साथ कैसे शिमला गई। पिता ने सरिता से पूछा तो सरिता सिर झुकाकर खड़ी रही। इससे प्रमोद रस्तोगी समझ गए कि उनकी बेटी झूठ बोल रही है इसलिए उन्होंने उससे सच बताने को कहा तो बड़ी मुश्किल ने उसने माना कि खुद उसने ही साहिल के साथ मिलकर सौरभ की हत्या की थी। इसके बाद वह सौरभ के साथ नहीं बल्कि साहिल के साथ शिमला गई थी।

पत्नी के जन्मदिन 25 फरवरी को मुस्कान के साथ डांस करता सौरभ।

बेटी की बात सुनकर कविता ओर प्रमोद एक दूसरे का चेहरा देखते ठगे से रह गए। फिर कुछ सोचते हुए दोनों अपनी बेटी को लेकर ब्रह्मपुरी थाने पहुंचे ओर वहां मौजूद पुलिस अधिकारी पूरी बात बता दी। घटना की जानकारी लगते ही एसपी सिटी आयुष विक्रम सिंह के अलावा एसएसपी विपिन टांडा भी थाने पहुंच गए। जिसके बाद पुलिस ने सबसे पहले तो छापामारी कर सरिता के प्रेमी और सौरभ की हत्या में शामिल साहिल शुक्ला को उसकी नानी के घर से गिरफ्तार कर सौरभ का शव बरामद करने सरिता के घर पहुंचे।

सरिता और साहिल ने सौरभ के शव को तीन टुकड़ों में प्लास्टिक की टंकी में सीमेंट के घोल में जमा दिया था। पन्द्रह दिन में सीमेंट पत्थर की तरह जम चुका था इसलिए मजदूरों की मदद से सीमेंट में जमे सौरभ के शव के टुकड़ों को किसी तरह निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजने के साथ ही दोनों आरोपियों के पास से हत्या में प्रयुक्त चाकू एवं अन्य सामान बरामद करने के अलावा साहिल के घर की भी तलाशी ली जहां उसके कमरे से मिली शराब की खाली बोतले, तंत्र-मंत्र की सामग्री और कई आपत्तिजनक चीजे जब्त कर दोनों को अदालत में पेश कर उन्हें रिमांड पर लेकर पूछताछ की गई।

कहानी की नींव पड़ी 2010 में। तब सौरभ और सरिता दोनों 11-12 साल की उम्र के थे। सरिता के नामी ज्योतिषाचार्य नानाजी ब्रह्मपुरी इलाके में रहते थे। सरिता नाना-नानी के साथ रहकर इसी इलाके के विवेकानंद हाईस्कूल में पढ़ती थी। सौरभ राजपूत की मां को ज्योतिष पर गहरा भरोसा था। इसलिए वह अक्सर सरिता के नानाजी के पास आती रहती थी। इस दौरान उनके साथ सौरभ भी होता था। इसी दौरान सौरभ और सरिता की दोस्ती हुई जो जल्द ही प्यार में बदल गई। सरिता दिन-रात सौरभ के सपनों में खोई रहने लगी। इसका नतीजा यह हुआ कि 9 वीं क्लास में वह फेल हो गई तो उसने हमेशा के लिए स्कूल छोड़ दिया। सौरभ ने उसे आगे पढ़ने को कहा तो सरिता ने साफ कह दिया कि मेरा मन तुम्हारे अलावा न किताबों लगता है ओर न दुनिया में।

सौरभ के रसूखदार राजपूत परिवार में दूसरी समाज की लड़की को बहू बनाकर लाना असंभव था लेकिन किशोर सौरभ ओर सरिता को लगता था कि प्यार करने वाले कभी डरते नहीं। बहरहाल दोनों में इतनी समझ भी नहीं थी कि प्यार समाज से छुपकर करना पड़ता है। इसलिए खुले आम मोहल्ले के मंदिर और पार्क में मिलने-जुलने के कारण दोनों परिवार को अपने किशोर बच्चों की इस हरकत के बारे में खबर हो गई। दोनों के इश्क पर लगाम कसने की कोशिश हुई तो 14 साल की

दोनों की मां सौतेली, नाना-नानी के घर रहकर बड़े हुए

आरोपी सरिता और साहिल दोनों की मां की मौत हो चुकी है। सरिता की मां करुणा की मौत के बाद उसके पिता प्रमोद ने सरिता की मौसी यानी अपनी साली कविता के साथ शादी की है जबकि पत्नी की मौत के बाद साहिल के पिता ने दूसरी महिला से शादी की है तो उनके साथ नोयडा में रहती है। सरिता और साहिल दोनों अपने नाना-नानी के घर में रहकर बड़े हुए है।

हमारी बेटी को फांसी दो: मुस्कान में माता-पिता।

ऐसा कर सकते हैं। इसलिए बात उनकी शादी की चली जिसमें सौरभ के राजपूत परिवार ने इस रिश्ते से साफ इंकार कर दिया। लेकिन सौरभ ओर सरिता एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। इसलिए 2016 में जिस रोज सरिता 18 साल की हुई उसके अगले रोज रात में एक बार फिर यह प्रेमी जोड़ा घर से भाग गया। सरिता बालिग हो चुकी थी इसलिए दोनों आपस में शादी कर मेरठ लौट आए।

यह देखकर सौरभ के परिवार ने उसे घर से वेदखल कर दिया। जिससे दोनों किराये का मकान लेकर रहने लगा। कुछ ही दिनों के बाद सौरभ की नौकरी मर्चेंट नेवी में लग जाने से इस प्रेमी जोड़े की लाइफ सेटल हो गई। नौकरी के चलते सौरभ को कई-कई महीने शिप पर रहना पड़ता था। नए जोड़े का एक दूसरे अलग रहना मुश्किल तो था लेकिन दोनों ने इस हालात से भी समझौता कर लिया था। शादी के अगले साल ही सरिता गर्भवती हो गई जिससे उसने एक बच्ची को जन्म दिया। बेटी के आ जाने के बाद सरिता का ज्यादातर समय अपनी बेटी के साथ बीतने लगा।

इधर शादी के दो साल बाद भी सौरभ के परिवार ने उसे वापस अपनाया तो नहीं लेकिन सौरभ के भाई-बहन यदाकदा उसके घर आने लगे तो सौरभ भी जब भारत में होता अपनी मां से मिलने घर आने जाने लगा। सौरभ मर्चेंट नेवी की नौकरी में काफी अच्छा कमा रहा था इसलिए उसने सरिता के लिए घर में सुख-सुविधा के सारे साधन जुटा दिए थे। इंग्लैंड में रहने के कारण उसे क्लब पार्टी ओर शराब का शौक भी हो गया था इसलिए वह जब तक भारत में रहता सरिता को लेकर पूरे देश में घूम-घूम कर बिंदास जिंदगी जीता।

कुछ दिन मेरठ में रहने के बाद सौरभ शिप पर वापस चला जाता तो 21-22 साल की उम्र की सरिता को अपनी रातों में सौरभ की कमी खलने लगती। क्योंकि यही वो उम्र होती है जब किसी भी युवक-युवती की शारीरिक मांग चरम पर होती है। इसलिए सौरभ की गैरमौजूदगी सरिता की रातों को नीरस बनाने लगी थी।

नहीं तोड़ने दी टंकी

शिमला से लौटने के बाद सरिता और साहिल ने सीमेंट में जमी लाश को दो मजदूरों की मदद से आठो में

पुलिस ने टंकी में जमा सिमेंट तोड़कर बरामद की सौरभ की लाश।

रखकर बाहर ठिकाने लगाने का प्रयास भी किया लेकिन जब मजदूरों ने बताया कि सीमेंट तोड़े बिना इसका बाहर जाना असंभव है तो दोनों डर गए थे। बताया जाता है कि इसके बाद ही सरिता ने अपने परिवार वालों को हत्या की झूठी कहानी बनाकर सुनाई थी।

इसी बीच चार साल पहले अचानक ही सरिता की मुलाकात अपने स्कूल टाईम के दोस्त साहिल शुक्ला से हो गई। हुआ यह कि स्कूल में सरिता के साथ पढ़ने वाले कुछ बच्चों ने मिलकर पुराने दोस्तों के मोबाइल नंबर

खोज-खोज कर एक वाट्सएप ग्रुप बनाया। जिसमें जुड़ने के बाद सरिता को मालूम चला कि उसके साथ स्कूल में पढ़ने वाला लड़का साहिल शुक्ला इन दिनों मेरठ में रहकर सीए कर रहा है। सरिता और साहिल की जिंदगी में काफी समानताएं थी जिसकी बात वे उन दिनों किया करते थे। जैसे ही सरिता बचपन से ही अपने नाना-नानी के यहां रहकर पढ़ाई कर रही थी तो साहिल भी अपने नाना-नानी के घर में रहकर उसकी विवेकानंद स्कूल में पढ़ता था जिसमें सरिता पढ़ती थी। दूसरी सबसे बड़ी समानता यह थी कि सरिता और साहिल दोनों की मां सौतेली थीं।

इसलिए जब वाट्सएप ग्रुप पर मुलाकात हुई तो एक ही शहर में होने की बात जानकर एक रोज वे आपस में मिले। साहिल अब पूरी तरह बदल चुका था। उसके पिता नोयडा में अधिकारी थे जिन्होंने मां की मृत्यु के बाद दूसरी शादी कर ली थी। साहिल का एक भाई लंदन में और बहन नोयडा में नौकरी करती थी जबकि वह यहां अकेली नानी के साथ रहकर सीए कर रहा था।

शेष पृष्ठ 7 पर...

प्रेमी को सेक्स टॉय बनाकर रखना चाहती थी मुस्कान

पूरे घटनाक्रम से साफ है कि साहिल सरिता से शादी करना चाहता था जबकि सरिता केवल उसका उपयोग सेक्स टॉय के तौर पर करना चाहती थी। ताकि

घर में पति की लाश रखकर मनाली में प्रेमी के साथ होली मनाती मुस्कान।

शारीरिक जरूरत साहिल से और आर्थिक जरूरत सौरभ से पूरी होती रहें। इसीलिए उसने सौरभ को तलाक देने से मना कर दिया था। क्योंकि वह जानती थी के नशे ओर काले जादू का दीवाना साहिल जिंदगी में इतना पैसा नहीं कमा सकता जितना सौरभ उसे हर महीने खर्च के लिए भेजता है।

जेल में एक साथ रहना चाहते है आरोपी

आरोपी साहिल और सरिता को अपने अवैध रिश्ते को लेकर जरा भी शर्म नहीं है। इसलिए जेल पहुंचकर दोनों ने एक ही बैरक में साथ रखे जाने की मांग की। सरिता ने जेलर को बताया कि वे दोनों एक दूसरे के बिना नहीं सो सकते। लेकिन जेलर ने नियमों को हवाला देकर बताया कि यह जेल है होटल नहीं यहां पति-पत्नी भी एक साथ नहीं रखे जाते।

मां बनकर साहिल को बोलती थी प्यार करने

साहिल काले जादू की मदद से अपनी मृत मां की आत्मा से स्वैप चेट पर बात करने की कोशिश कर रहा था। इसकी जानकारी लगने पर सरिता ने फर्जी आईडी बनाकर साहिल की मां की आत्मा बनकर उसे जबाव देना शुरू कर दिया था। इस दौरान वह साहिल को उसकी मां बनकर बताती थी कि जिस लड़की से तुम्हारी दोस्ती है वह बहुत अच्छी है। वो तेरे लिए कुछ भी कर सकती है वह हमेशा तुझे खुश रखेगी।

सिर और कलाई काटकर ले गया था अपने साथ

जांच में सामने आया है कि हत्या के बाद साहिल ने सौरभ का सिर और दोनों हथेलियां काटकर अपने कमरे में ले गया था। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि क्या साहिल ओर सरिता के सिर और हथेलियों से कोई तांत्रिक क्रिया की थी। क्योंकि लाश छोटा करने के लिए अपराधी आमतौर पर सिर-पैर ओर हाथ काटते हैं। इसलिए केवल कलाई क्यों काटी गई इस बात की जांच की जा रही है। दूसरे दिन आरोपियों ने बाजार से प्लास्टिक की टंकी लाकर लाश को सीमेंट के घोल में जमा दिया था।

कत्ल और काला जादू

पुलिस के अनुसार आरोपी कत्ल का वध कहता था। उसने सौरभ का कत्ल भी सरिता के हाथ से कखवाया। कत्ल के बाद आधी रात में साहिल सौरभ का सिर और कलाई काटकर अपने घर ले गया था। बताया जाता है कि उसने इस दौरान सिर ओर कलाई के साथ तांत्रिक अनुष्ठान किया था ताकि सौरभ के कत्ल का राज कभी उजागर न हो।

जींद

अय्याशी की दीवानी मां ने प्रेमी जेठ से करवा दी मासूम बेटे की हत्या

demo pic.

डियर जेठजी

जेठ के साथ अय्याशी में आकंठ डूबी विमला को डर था उसके पति की शक्ल का बच्चा पैदा होने पर जेठ उसे छोड़ न दे। इसलिए अय्याशी के रिश्ते में अपनी सच्चाई साबित करने मां ने आशिक जेठ से अपने मासूम बच्चे की हत्या करवा दी।

होली के रोज हरियाणा के जींद जिले में उचाना थाने की सीमा में बसे छातर गांव की गलियों में दोपहर ढलते-ढलते बड़े-बुजुर्गों की होली लगभग शांत हो चुकी थी। लेकिन बच्चों का मन इतने में कहां भरता है इसलिए गांव की गलियों में छोटे-छोटे बच्चे अभी भी शोर मचाते हुए एक दूसरे पर धूल-पानी फेंक रहे थे। ऐसे में एक गली में स्थित अपने मकान के दरवाजे पर बैठा अमित सामने गली में बच्चों के साथ होली खेलना सीखने की कोशिश में उछल-कूद मचा रहे ढेड साल के अपने मासूम बेटे यश को देखकर मन ही मन खुश हो रहा था। लेकिन इसी बीच दो मोटर साइकल सवार उसके बच्चे को लेकर भागे तो बेटे का अपहरण होते देख अमित जोरों शोर मचाते हुए पीछे भागा मगर मोटर साइकल सवारों को पकड़ न सका। थोड़ी देर में मामले की जानकारी लेकर गांव वाले उचाना थाने पहुंचे तो पुलिस ने गांव के सीसीटीवी कैमरे खंगालने का काम शुरू किया तो जल्द ही यह बात सामने आ गई कि यश को मोटर साइकल पर लेकर भागने वाला कोई और नहीं बल्कि खुद अमित का बड़ा भाई यानी यश का ताऊ सोनू था जो भाई के साथ थाने न आकर अभी भी अपनी बाइक लेकर यश की तलाश में जुटा था। लेकिन गांव के कैमरे पूरी कहानी के संबंध में पुलिस को इशारा कर चुके थे। इसलिए जैसे ही बच्चे को खोजने का नाटक करने के बाद सोनू वापस आया पुलिस ने उसे पूछताछ के लिए थाने बुलाकर घटना के समय उसके गांव में मौजूद न होने का कारण पूछा तो सोनू समझ गया कि ऐसा सवाल पूछे जाने का मतलब वह शक के दायरे में आ चुका है। इसलिए जबाव देने में उसकी जवान अटकने लगी।

पुलिस जानती थी कि कैमरा झूठ नहीं बोलता क्योंकि वह मशीन है आदमी नहीं। इसलिए सोनू ने पुलिस को चकमा देने का प्रयास किया तो टीआई कुलदीप सिंह ने उसके साथ सख्ती करने का फैसला कर लिया जिससे उसने टूटकर यश की हत्या की बात स्वीकार करते हुए उसे जिंदा ही नरवाना के पास सिरसा ब्रांच नहर में फेंक देने की बात पुलिस को बता दी। जिससे पुलिस ने गोताखोरा की मदद से यश के फेंके जाने के स्थान से लगभग एक किलोमीटर दूर बड़नपुर नहर से मासूम का शव बरामद करने के साथ ही यश की मां विमला (बदला नाम) को भी गिरफ्तार कर लिया। जिसके बाद जेठ-बहू के अनैतिक रिश्ते में मासूम के मारे जाने की कहानी इस प्रकार सामने आई।

कोई तीन-साढे तीन साल पहले यश की मां विमला की शादी छातर निवासी अमित के संग हुई थी। मजदूरी कर पेट पालने वाले अमित का बड़ा भाई सोनू पास के कस्बे में सब्जी बेचने का काम करता था। दोनों भाई एक दूसरे पड़ोस में अलग-अलग रहते थे लेकिन उनके मन में एक दूसरे के प्रति कोई कड़वाहट नहीं थी।

बताया जाता है कि सोनू की शादी पास के गांव में हुई थी लेकिन पत्नी से न बनने के कारण वह दो साल बाद ही अपने मायके गई तो फिर लौटकर सोनू के पास वापस नहीं आई। इसलिए जब अमित ने विमला से शादी की तो उसने विमला से कहा कि अच्छा नहीं लगता पड़ोस में रहने वाला भाई अपने हाथ से रोटी सेंके इसलिए तुम उसके लिए चार रोटी बना दिया करो। विमला ने उसकी बात मान ली तो अमित ने अपने बड़े भाई सोनू से कह दिया कि वो खाना खुद न बनाए विमला उसके लिए रोटियां सेंक दिया करेगी। सोनू को भला क्या ऐतराज हो सकता था इसलिए अगले दिन से विमला उसे रोटियां सेंकने लगी जिससे छोटे भाई पर आर्थिक भार न आए इसलिए सोनू भी कभी अक्सर पूरे परिवार का आटा खरीदकर लाने लगा। शहर में सब्जी तो वह बेचता ही था इसलिए रोज शाम को गांव वापस आते समय भी सब्जी भी अपने साथ लाने लगा।

इधर कुछ दिनों बाद सोनू को पता चला कि अमित के साथ विमला की यह पहली शादी नहीं है। इससे पहले उसकी शादी जिस युवक से हुई थी उसे वह तलाक दे चुकी है। इतना ही नहीं अमित से शादी करने से पूर्व वह एक अन्य युवक के साथ भी रही है जिसके खिलाफ उसने बाद में बलात्कार का मामला भी दर्ज करवा रखा है। इससे सोनू इतना तो समझ गया कि विमला कई मर्दों के साथ रह चुकी है। चूंकि सोनू की पत्नी उसे छोड़कर जा चुकी थी इसलिए उसे भी एक औरत की जरूरत महसूस होती थी इसलिए कुछ दिनों के बाद उसने विमला का संग पाने की सोचकर उसके लिए शहर से पहले तो खाने-पीले का सामान लाना शुरू किया इसके बाद जब उसने देखा कि विमला उसे खुलती जा रही है तो उसके लिए श्रृंगार का सामान भी लाकर देने लगा। जिससे विमला भी समझ गई कि जेठ उससे क्या चाहता है। इसलिए वह भी अपनी तरफ से लगाम ढीली छोड़ने लगी। यह बात सोनू की समझ में आई तो सोनू उससे बोला कि चलो तुम्हें कुछ खरीददारी करनी हो तो मेरे साथ शहर चलो और जो चाहिए वह खरीद लो। विमला राजी हो गई तो एक रोज सोनू उसे अपने साथ शहर ले गया जहां उसने विमला के लिए न केवल खूब खरीददारी करवा दी साथ ही अपनी पसंद के अंडर गारमेंट भी दिलवा दिए। विमला ने जेठ के सामने ऐसे कपड़े खरीदने में झिझक नहीं दिखाई तो वापस लौटने से पहले सोनू ने उससे फिल्म देखने को कहा लेकिन विमला ने यह कहकर मना कर दिया कि वो पति को बताकर नहीं आई है इसलिए उनके वापस आने से पहले घर लौटना जरूरी है। इस पर मौका देखकर सोनू फिल्म देखने की जिद करने लगा लेकिन विमला नहीं मानी तो सोनू से उसके सामने शर्त रख दी कि ठीक है मगर तुम्हें किसी रोज मेरे साथ मोबाइल पर फिल्म देखना पड़ेगी।

विमला समझ गई जेठ उसे मोबाइल पर किस तरह की फिल्म दिखाने की योजना बनाए हुए है। इसलिए दो दिन बाद तबियत ठीक न होने का बहाना बनाकर सोनू सब्जी बेचने शहर न जाकर दोपहर में खाना खाने के बहाने अमित के घर पहुंच गया। यह देखकर विमला उससे बोली खाना लगाऊं या फिल्म दिखाने का सोचकर आए हो।

बड़ी समझदार हो।

और नहीं तो क्या मुझे तो यह भी मालूम है कि तुम्हें किस तरह की फिल्म दिखाना है।

किस तरह की विमला की बात सुनकर सोनू से चौंकने का नाटक किया तो विमला बोली भोले न बनो दरवाजा बंद कर दो। कहना नहीं होगा कि इसके बाद जेठ-बहू का पवित्र रिश्ता वासना के दल-दल में डूब गया। जिसके बाद सोनू और विमला आए दिन अय्याशी का मौका निकालकर एक दूसरे की जरूरत पूरी करने लगे। जिसके चलते जल्द ही सोनू विमला के खुश करने के तरीकों को दीवाना होकर उससे अपने एक बच्चे की मांग करने लगा। इस पर विमला भी राजी हो गई तो सोनू बोला लेकिन यह कैसे तय होगा कि बच्चा मेरा है या अमित का।

तुम उसकी चिंता मत करो। वह सब में संभाल लूंगी।

वह मान जाएगा तुम्हारे साथ सोए बिना, विमला की बात पर सोनू से शंका जताई तो विमला बोली अरे उसे खुश करती रहूंगी। लेकिन उससे बच्चा नहीं होने दूगीं। इस पर सोनू ने पूछा कैसे तो विमला ने यह कहकर चुप कर दिया कि तुम्हें आम खाना है या पेड़ गिनना है।

इस घटना के दो महीने बाद ही विमला ने जेठ को खुश खबर दी की वह जल्द ही वाप बनने वाला है। जिससे सोनू उसका और भी ध्यान रखने लगा। समय आने पर विमला ने एक बेटे को जन्म दिया तो जेठ के कहने पर उसने उसका नाम यश रखा। अब विमला के दोनों हाथ में लड्डू थे। क्योंकि अमित के लिए तो यश उसका बेटा था ही तो वहीं विमला ने जेठ को यह भरोसा दिला रखा का कि यश अमित का नहीं बल्कि उसका बेटा है। इसलिए अमित और सोनू दोनों की विमला का पहले से ज्यादा ध्यान रखने लगे थे।

लेकिन समय के साथ यश बड़ा हुआ तो उसकी शक्ल अपने पिता अमित से इतनी अधिक मिलने लगी कि गांव का हर आदमी यह बात करने लगा कि बेटा बिलकुल वाप पर गया है। इससे सोनू की शक होने लगा कि यश उसका नहीं बल्कि अमित का खून है। इसलिए इस बात को लेकर जेठ-बहू में कभी-कभी विवाद भी होने लगा। अपितु विमला उसे यह भरोसा दिलाने की कोशिश करती रहती कि यश अमित का खून नहीं है।

वास्तव में सोनू को अपनी संतान की बेहद चाहत थी। इसलिए कुछ दिनों बाद उसने विमला से कहा कि अगर उसकी पहचान में कोई लड़की हो तो वो उसके साथ सोनू की शादी करवा दे ताकि वह अपनी एक संतान पैदा कर सके। अपितु सोनू ने विमला को भरोसा दिलाया कि अगर उसकी शादी होती भी है तब भी वह विमला से संबंध नहीं तोड़ेगा। लेकिन विमला जानती थी कि अभी तो दो साल से उनके पाप की भनक गांव में किसी को नहीं है एक बार सोनू की बीवी आ गई तो शेष पृष्ठ 7 पर...

जेठ चाहता था कि विमला केवल उसकी संतान पैदा करे

पुलिस के अनुसार जेठ चाहता था कि विमला भले की अपने पति के साथ सोती रहे लेकिन उसे संतान केवल जेठ से होना चाहिए। विमला जब गर्भवती हुई

नहर से मासूम का शव निकालता गोताखोर।

थी तब उसने जेठ को भरोसा दिलाया था कि गर्भ उसका ही है। सोनू ने यह बात मान भी ली थी लेकिन एक साल का होते होते जब बच्चे की शक्ल सोनू के बजाए विमला के पति से मिलने लगी तो सोनू विमला से नाराज रहने लगा था। इसलिए जेठ को खुश करने के लिए विमला ने उसे बच्चे की हत्या करने को कह दिया था।

सोनू को मालूम था सीसीटीवी के सामने से नहीं गुजरना है

पकड़े जाने के बाद सोनू ने बताया कि उसे मालूम था कि गांव का इकलौता सीसीटीवी कैमरा कहां लगा है। इसलिए उसने पहले की सोच रखा था कि बच्चे को को लेकर इस रास्ते से नहीं जाना है। लेकिन संयोग से जब उसने यश को उठाया तब अमित घर के बाहर दहलीज पर बैठा था इसलिए जैसे ही उसने दो मोटर साइकल सवारों को यश को ले जाते देखा तो उसने शोर मचाते हुए पीछा करना ारू दिया। इससे सोनू घबड़ा गया और इसी घबड़ाहट में वह उस रास्ते से निकला जिस पर सीसीटीवी कैमरा लगा था। जिससे कैमरे में सोनू की तस्वीर कैद हो जाने से मामला खुल गया।

मृतक मासूम

...पृष्ठ 5 का शेष

एक मुलाकात के बाद अक्सर दोनों में मुलाकात होने लगी। जिससे कभी साहिल सरिता से मिलने उसके घर आने लगा तो कभी सरिता साहिल के घर जाने लगी। जहां साहिल का कमरा देखकर सरिता को मालूम चला कि साहिल काला जादू सीख रहा है। दरअसल साहिल ने उसे बताया कि 18 साल पहले हुई मां की मौत ने उसे तोड़ दिया है वह मां के काफी करीब था इसलिए वह काले जादू के जरिए अपनी मां से स्नैप चैट पर बात करता है। वह मां को मैसेज लिखकर छोड़ देता है और उसे भरोसा है कि एक न एक रोज मां उसके मैसेज का जबाव देगी।

सरिता को साहिल के लाईफ जीने की इस स्टाइल से कोई ऐतराज इसलिए भी नहीं था क्योंकि सौरभ के साथ रहकर वह समझ चुकी थी कि हर एक आदमी की अपनी स्टाइल होती है। सौरभ को क्लब, पार्टी, डांस और हर पल को सेलीब्रेट करने का शौक था तो साहिल के अपने शौक और अपनी धुन। उसे साहिल के बीयर, गांजा और अन्य ड्रग्स लेने से भी कोई ऐतराज नहीं था।

समय के साथ साहिल और सरिता की मुलाकातें बढ़ने लगी जिससे धीरे-धीरे रात की तनहाई में सरिता के सामने साहिल की तस्वीर उभरने लगी। वह सोचने लगी कि सौरभ की कमी साहिल पूरी कर सकता है। वह उसका पुराना दोस्त भी है और कुंवारा भी। सबसे बड़ी बात यह कि सरिता की तरह साहिल को भी रोकने टोकने वाला कोई नहीं था। लेकिन साहिल अपनी तरफ से पहल क्यों नहीं कर रहा इस बात का लेकर वह कुछ दिन तो परेशान रही फिर उसने खुद पहल करने की एक शातिर योजना बना ली। उसे मालूम था कि साहिल अपनी दिवंगत मां की आत्मा से बात करने के लिए स्नैप चैट पर मैसेज छोड़ता था इसलिए उसने इसी रास्ते से साहिल को घेरने की योजना बनाकर अपने भाई के मोबाइल नंबर से एक फर्जी स्नैप चैट एकाउंट बनाकर उसके जरिए साहिल की मां की आत्मा बनकर साहिल को उसकी चैट के जबाव देना शुरू कर दिया।

स्नैप चैट पर 18 साल पहले मर चुकी मां के जबाव आने से साहिल खुशी में पागल हो गया। उसने यह बात सरिता को बताई तो सरिता ने खुशी व्यक्त करते हुए साहिल को अपनी बाहों में लेपेट लिया। सरिता की इस हरकत का वही असर हुआ जो सरिता चाहती थी। दरअसल ऐसा करने पर जब साहिल ने खुद को एक जवान खूबसूरत युवती के जिस्म को अपने इतने करीब पाया तो उसकी नशों में खून उबलने लगा। सरिता के बारे में उसने सोचा तो कई बार था लेकिन यह सोचकर रह जाता था कि शादीशुदा सरिता शायद ही अपने पति को धोखा दे की सोचे।

कुछ देर बाद साहिल अपने घर चला गया लेकिन इसके बाद उसने सरिता की तरफ पहल करने का

फैसला कर अगले ही दिन मां से बात होने की खुशी में सरिता के लिए पार्टी देने की बात कही तो सरिता बोली ठीक है तुम मेरे घर आ जाना हम दोनों यही पार्टी करेंगे। दूसरे दिन सरिता साहिल के साथ एकांत की चाहत में अपनी बेटी को माता-पिता के घर छोड़ आई जिसके बाद रात में पार्टी के दौरान जब साहिल ने उसके सामने बीयर पीने का प्रस्ताव रखा तो वह बोली यस, मैं तुम्हारे लिए वह सब करुंगी जिससे तुम्हें खुशी मिले। इसके बाद उसने साहिल के साथ बीयर भी पी और गांजा भी पिया। देर रात तक दोनों बेडरूम में पार्टी करते रहे इसके बाद अचानक की सरिता ने साहिल ने कहा कि यार तुमने ठीक किया जो अब तक शादी नहीं की।

क्यों तुम अपनी शादी से खुश नहीं हो क्या?

अरे नहीं यार बहुत खुश हू। पर तुम नहीं जानते कि जब तक सेक्स का स्वाद नहीं लिया तब तक तो ठीक है आदमी अपनी रातें काट लेता है लेकिन एक आदमी सेक्स से परिचित हो जाए तो अपने पार्टनर के बिना अकेले रातें बिताना बहुत मुश्किल होता है।

तुम्हारा पति भी तो वहां अकेला होगा।

क्या मालूम तो सकता हो और हो सकता है अकेला न भी हो, उसने इस जरूरत के लिए वहां कोई पार्टनर बना ली हो। सरिता की इन बातों से साहिल के दिमाग में स्नैप चैट पर आए मां के उस मैसेज की याद आ गई जिसमें उन्होंने कहा कि वो मेरी इस दोस्त के बारे में सब जानती हैं। सरिता बहुत अच्छी लड़की है तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकती है। वास्तव में तो साहिल को आगे बढ़ने के लिए खुद सरिता ने ही अपने फर्जी एकाउंट से साहिल को यह मैसेज लिखा था।

इधर सरिता की ऐसी बातें सुनकर साहिल अपना कंट्रोल खोने लगा तो यह देखकर सरिता बोली सारी यार रात में मुझे इतने भारी कपड़े पहनने की आदत नहीं है यदि तुम बुरा न मानों में तो मैं चेंज कर लूं। ओके सरिता की बात सुनकर साहिल बाहर ड्राइंग रूम में जाने लगा तो यह देखकर सरिता बोली अरे तुमसे किसने बाहर जाने का कहा। मुझे तुमसे कोई दिक्कत नही मैं तुम्हारे सामने भी चेंज कर सकती हूं। विस्मय से भरा साहिल वापस बैठ गया जिसके बाद सरिता ने साहिल को अपनी सुंदरता की जो झलक दिखाई उससे वह पागल होकर सरिता से लिपट गया तो सरिता ने भी उसे अपनी बाहों में कसकर पलंग पर गिरा लिया। इसके बाद साहिल ने सरिता को रोज बीयर, गांजा और ड्रग्स का नशा तथा सरिता ने साहिल को अपने रूप का नशा पिलाना शुरू कर दिया। साहिल के पास खुद भी पैसा था यहां सौरभ भी सरिता को हर महीने बड़ी रकम भेजता था जिससे सरिता अपने प्रेमी पर लुटाने लगी। अपितु कोरोना काल में सौरभ की मर्चेंट नेवी की नौकरी जाती रही थी। जिसके बाद वह इंग्लैंड के एक मॉल में नौकरी कर रहा था।

धीरे-धीरे साहिल का अक्सर सरिता के घर में बना रहना पड़ोसियों की नजर में आया तो सरिता ने उनको बताया कि यह उसका भाई है जो रोज उसका खाना लेकर आता है। लेकिन पड़ोसी इतने भोले तो नहीं होते। इसलिए हुआ यह कि एक रोज मकान मालिक ने उस वक्त उत्सुकता वश सरिता के कमरे में झांक लिया जब साहिल अंदर था। उस समय सरिता और साहिल पूरी तरह निर्वस्त्र होकर एक दूसरे के साथ शारीरिक सुख लूटने में खोए हुए थे। इसलिए यह देखकर मकान मालिक ने सरिता से तो कुछ नहीं कहा लेकिन कुछ समय के बाद सौरभ के भारत आने पर उसने इस बात की जानकारी सौरभ को दे दी। सरिता के धोखे की जानकारी से सौरभ टूट गया और उसने तलाक फाइल कर दिया। लेकिन सरिता इसके लिए तैयार नहीं थी। फिर परिवार वालों ने दोनों का समझौता भी करवा दिया जिसके बाद 2023 में सौरभ वापस इंग्लैंड चला गया। सौरभ वहां से वह सरिता के खर्च के लिए हमेशा बड़ी रकम भेजता रहा पर दो साल तक भारत नहीं आया। जिसका फायदा उठाकर साहिल ने सरिता को नशे की और सरिता ने साहिल को अपने संग करने की लत लगा दी।

दो साल बीतने पर सौरभ का गुस्सा थोड़ा कम हुआ साथ ही उसे अपनी भी गलती का अहसास हुआ कि जो वह जवान पत्नी से दूर रहा। इसलिए भारत में ही रहकर नौकरी करने का मन बनाकर 25 फरवरी को सरिता के जन्म दिन के रोज सौरभ भारत वापस आया। यहां आकर उसने धूमधाम से सरिता का जन्म दिन मनाया। लेकिन सौरभ के भारत आने पर सरिता और साहिल पागल हो गए। दोनों को डर था कि सौरभ के यहां रहते हुए वे न तो नशा कर पाएंगे और न अय्याशी। बिना नशा के अब सरिता भी नहीं रहना चाहती थी इसलिए साहिल ने सरिता से सौरभ को रास्ते से हटा देने के लिए कहा जिस पर सरिता राजी भी हो गई।

तीन मार्च को बेटी को माता-पिता के घर छोड़कर आने के बाद सरिता ने सौरभ के रात के खाने में नींद की गोलियां मिलाकर खिला दी। जिससे रात में जब वह बेहोश हो गया तो सरिता ने साहिल को बुलाकर सीने में चाकू घोंपकर उसे मार डाला और शव के टुकड़ों को दूसरे दिन प्लास्टिक की टंकी में भरकर ऊपर से सीमेंट का घोल भर दिया।

कथा पुलिस
सूत्रों पर आधारित।

...पृष्ठ 3 का शेष

जिससे बातचीत के दौरान जब आकाश को पता चला कि सजनी आज भी उससे मिलने को बेताब है तो जनवरी 24 में वह एक रोज चुपचाप अशोकनगर आया और यहां से सजनी का अपहरण कर उसे अपने साथ ले गया।

जवानी की दहलीज पर खड़ी बेटी के अपहरण से पिता परेशान हो गए। लेकिन उन्हें शक था कि जरूर बेटी के इस अपहरण का संबंध इंदौर से है इसलिए उन्होंने अपने स्तर पर आकाश-पाताल एक कर तलाश लिया और घर वापस ले आए। लेकिन जून 2024 में आकाश ने एक बार फिर अपने दोस्त अभिषेक जाटव, राजा और विशाल की मदद से सजनी का अपहरण कर लिया। इस बार काफी प्रयासों के बाद भी जब परिवार वाले सजनी की खोज नहीं कर सके तो अशोकनगर कोतवाली में नाबालिग सजनी के अपहरण का मामला दर्ज करवा दिया गया।

पुलिस ने जांच शुरू की जिसमें जनवरी में भी सजनी का अपहरण किए जाने की बात सामने आने पर पुलिस ने साइबर सेल की मदद से आकाश और सजनी की लोकेशन ज्ञात कर उसे इंदौर से बरामद कर लिया।

मेडिकल जांच में सजनी के संग दुराचार किए जाने की बात सामने आने पर पुलिस ने आकाश एवं उसके साथियों के खिलाफ अपहरण एवं बलात्कार के अलावा पॉक्सो एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज किया था। जिसमें आकाश को छोड़ बाकि सभी आरोपियों को गिरफ्तार करने में पुलिस ने सफलता हासिल की थी।

इन घटनाओं से सजनी के परिवार वाले डर गए थे। उन्हें लगता था कि जिस रोज सजनी बालिग हो जाएगी तब वह पुलिस के सामने कुछ भी बयान दे सकती है। इसलिए परिवार के लोग उसकी जल्द से जल्द शादी कर देना चाहते थे। इसके लिए चंद महीने पहले ही राजस्थान के सवाई माधोपुर में रहने वाला विक्रम रिश्ता तय हो जाने के बाद एक मार्च को बारात लेकर सजनी के घर पहुंचा जहां से शादी के बाद जब वह अपनी दुल्हन सजनी को लेकर घर वापस जा रहा था तब रास्ते में आकाश ने विक्रम के साथ मारपीट कर एक बार फिर सजनी का अपहरण कर लिया। लेकिन संयोग से जिस स्कार्पियो में सजनी का अपहरण किया गया उसमें जीपीएस लगा हुआ था जिसकी मदद से पुलिस ने उसे पांच घंटे बाद ही देवास के पास से बरामद कर परिवार को वापस सौंप दिया।

कथा पुलिस
सूत्रों पर आधारित।

...पृष्ठ 6 का शेष

यह पाप चार दिन भी नहीं छुपा रह सकता। जिससे विमला पर जो सोनू अभी पैसा खर्च करता है वह मारा जाएगा। इसलिए उसने सोनू से कहा कि ठीक है अगर तुम्हें शक है कि यह बच्चा अमित का है तो इसे रास्ते से हटा दो फिर कुछ समय बाद मैं किसी बहाने से अमित को छोड़ दूंगी तो तुम मुझे अपने साथ शहर में रख लेना।

सोनू का यह बात जम गई लेकिन उसने कहा कि ठीक है तुम किसी बहाने से अमित को छोड़ दो हम यश से बाद में निपट लेंगे। लेकिन विमला ने कहा कि बाद में यश को कुछ होगा तो लोग हम पर शक करेंगे। इसलिए पहले यश को रास्ते से हटा दो फिर मैं अमित को छोड़कर तुम्हारे साथ रहने लगूंगी।

सोनू को यह योजना सही लगी। इसलिए उसने शहर में रहने वाले अपने एक दोस्त को मदद करने के लिए राजी कर लिया। क्योंकि वह जानता था कि ढेड साल के बच्चे को अकेले मोटर साइकल पर लेकर भागना आसान नहीं होगा। इसके बाद उसने यह योजना विमला को बता दी इस पर विमला ने उससे इस योजना पर होली की दोपहर में काम करने कहा। उसका कहना था कि उस समय लोग नशा आदि करके सो जाते है इसलिए कोई ध्यान नहीं देगा।

होली के रोज यही हुआ। गांव के लोग सुबह मस्ती करते रहे जिसके बाद दोपहर में सड़के लगभग खाली हो गई। यह देखकर योजना अनुसार विमला ने यश को बच्चों के साथ होली खेलने भेज दिया और खुद उसने अंदर काम करने का नाटक करते हुए सोनू को खबर कर दी। जिससे गांव के बाहर कुछ दूरी पर अपने दोस्त के साथ खड़ा सोनू गांव में आया और बच्चों के पास खड़े यश को अपने साथ मोटर साइकल पर लेकर तेजी से भाग गया। संयोग से उस समय अमित बाहर बैठा यश को होली खेलते देख रहा था इसलिए उसने शोर मचाते हुए मोटर साइकल के पीछे दौड़ लगाई मगर बदमाशों को पकड़ने में नाकाम रहा। लेकिन सीसीटीवी कैमरे में यश को लेकर भागते हुए सोनू की तस्वीर कैद हो जाने से वह जल्द ही पुलिस के हाथ लग गया और जेठ-बहू के पाप की पूरी कहानी सामने आ गई।

कथा पुलिस
सूत्रों पर आधारित।

भोपाल

बलात्कार के बाद मासूम की हत्या करने वाले वहशी को मिली तिहरी फांसी और दोहरी उम्रकैद की सजा

तिहरी फांसी

भारतीय न्याय संहिता के नए कानून अनुसार भोपाल में 5 साल की मासूम के साथ दुराचार के बाद हत्या के दोषी युवक को 3 अलग-अलग धाराओं में फांसी की सजा सुनाई गई है। आरोपी को 2 धाराओं में उम्रकैद और 2 धाराओं में 7-7 साल की सजा सुनाए जाने के अलावा अपराध छुपाने में उसकी मदद करने वाली मां और बहन को भी 2-2 साल की कैद की सजा सुनाई गई है।

18 मार्च 2025 को राजधानी की जिला अदालत में विशेष न्यायाधीश कुमुदिनी पटेल के कक्ष में दाखिल होते पांच की साल की मासूम बच्ची के साथ बलात्कार और हत्या में दोषी ठहराए जा चुके अतुल निहाले और उसकी मां बसंती निहाले तथा जवान बहन चंचल भालसे के चेहरे पर न तो शर्म थी और न भय के निशान।

अदालत के बाहर भारी भीड़ जमा थी जिसमें सबसे अधिक संख्या शाहजहांनाबाद की उस मल्टी के आसपास रहने वाले लोगों की थी जिन्होंने इस दरिंदे की शिकार बनी मासूम गुड़िया को मोहल्ले के बच्चों के साथ परी सी उड़ती और चिड़ियों सी चहकती देखने के अलावा 26 सितंबर को उसकी खून सनी सड़ी गली लाश भी देखी थी। शाहजहांनाबाद पुलिस ने बलात्कार और हत्या के आरोपी अतुल निहाले के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और पॉक्सो एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत जबकि उसकी मां और बहन को अपराध के साक्ष्य छुपाने का आरोपी बनाकर अदालत में चालान पेश किया था।

सुनवाई की शुरुआत से ही लोगों को भरोसा था कि नराधम भाई-बहन के अलावा इन दोनों को जन्म देने वाली मां को अपने किए की सजा मिलना तय है। अभियोजन पक्ष की तरफ आरोपियों को दोषी साबित कर उनके अंजाम तक पहुंचाने के अपने प्रयास में विशेष लोक अभियोजक दिव्या शुक्ला ने पूरी ताकत झोंक रखी थी। सुनवाई के दौरान जब बचाव पक्ष से मुख्य आरोपी अतुल को मानसिक बीमार बताकर उसके अपराध को कम करने की कोशिश की तो एक बारगी लोगों के दिमाग में यह भय सताने लगा कि कि क्या बचाव पक्ष ऐसी दलीलें पैदा कर अतुल को बचा पाने में कहीं सफल तो नहीं हो जाएगा। लेकिन विशेष लोक अभियोजक दिव्या शुक्ला के ठोस तर्कों के आगे बचाव पक्ष के इस प्रयास ने जल्द ही दम तोड़ दिया। इस मामले में कुल 22 गवाहों की गवाही हुई और मौखिक एवं अन्य साक्ष्य अदालत में पेश किए गए। आरोपी को दोषी ठहराने में डीएनए टेस्ट की रिपोर्ट ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे यह साबित हो सका कि हत्या से पहले मासूम गुड़िया पर यौन हमला करने वाला अतुल निहाले की था।

इन तमाम सबूतों और गवाहों के बयानों के आधार पर अदालत दो दिन पहले तीनों आरोपियों को दोषी साबित ठहरा चुकी थी। 18 मार्च को तीनों को सजा सुनाई जाना थी जिसके लिए बचाव पक्ष ने सजा में नरमी बरतने की अपील की तो वही अभियोजन पक्ष की तरफ से विशेष लोक अभियोजक दिव्या शुक्ला ने आरोपी अतुल निहाले के अपराध को रेयर ऑफ रेयरेस्ट मानते हुए फांसी की सजा की मांग की। जाहिर से बात है कि आरोपी ने जिस तरह से मासूम पर जुर्म किया था उसे देखते हुए अदालत में मौजूद हर एक शख्स दिव्या शुक्ला की मांग से सहमत था।

इसके बाद सभी पक्षों को सुनने के बाद माननीय न्यायाधीश कुमुदिनी पटेल ने दोषी ठहराये जा चुके अतुल निहाले के बर्बर कृत्य के खिलाफ कड़ी टिप्पड़ी करते हुए बीएनएस की अलग-अलग

जुर्म की भयावहता का अंदाजा आरोपी को मौत की सजा सुनाते हुए विशेष न्यायाधीश कुमुदिनी पटेल द्वारा की गई टिप्पड़ी से लगाया जा सकता है। माननीय न्यायाधीश ने कहा- ''यह प्रकरण दुर्लभतम मामलों की श्रेणी में आता है। यदि हम बच्चों को ऐसा माहौल न दे सके कि वे अपने ही घर, आंगन, स्कूल में सुरक्षित खेल सकें तो फिर सभ्य समाज की परिकल्पना कैसे की जा सकती है। यदि मृत्युदंड से भी बड़ी कोई सजा होती तो अभियुक्त उसका पात्र है।''

तीन धाराओं में फांसी, दो धाराओं में आजीवन कारावास और दो में 7-7 साल की सजा सुनाई जबकि आरोपी मां और बहन को 2-2 साल की सजा सुनाई गई। इस फैसले के बाद यह घटना एक बार फिर चर्चा में आ गई।

24 सितंबर 2024 की दोपहर में शाहजहांनाबाद की एक मल्टी के भू-तल पर रहने वाली 5 साल की मासूम गुड़िया अपनी दादी के साथ इसी मल्टी की पहली मंजिल पर रहने वाले अपने ताऊ के घर गई थी। इस दौरान उसने बाहर सड़क पर हेलीकाप्टर के उड़ने जैसी आवाज सुनी तो वह हेलीकाप्टर देखने दादी का साथ छोड़कर बाहर निकल आई। वास्तव में शोर हेलीकाप्टर का नहीं बल्कि गली में नगर निगम के कर्मचारियों द्वारा की जा रहीं फागिंग मशीन का था जिससे निकल रहे धुएं ने आसपास के सभी रहवासियों को अपने फ्लैट के खिड़की दरवाजे बंद करने को मजबूर कर दिया था।

बहरहाल थोड़ी देर में शोर करती मशीन तो दूर चली गई लेकिन गुड़िया फिर दादी के पास वापस नहीं लौटी। शाहजहांनाबाद थाने में गुडिया के अपहरण का मामला दर्ज करने के बाद पांच थानों के 100 से अधिक पुलिसकर्मी और अधिकारियों ने आसपास का पूरा इलाका छान मारा। कालोनी के लोगों ने अगले दिन पुलिस थाने का घेराव कर बबाल मचाना शुरु कर दिया।

सीसीटीवी खंगाल चुकी पुलिस को भरोसा था कि मासूम बच्ची घटना स्थल के आसपास की कहीं हो सकती है। इसलिए दो दिन बाद जब अतुल निहाले के फ्लैट से बदबू आना शुरू हो गई तो पुलिस ने उसके फ्लैट की तलाशी ली जिसमें मासूम गुड़िया का शव पानी की टंकी के अंदर मिल गया जिससे ऊपर से पुराने कपड़ों से ढका गया था। मासूम के प्राइवेट पार्ट के चारों तरफ बहा खून सूखकर काला पड़ चुका था जिससे साफ था कि मासूम की हत्या से पहले उसके साथ पाप किया गया था। मौके से बसंती और चंचल को गिरफ्तार कर लिया गया जबकि फरार हो चुके अतुल को अगले दिन इटारसी के पास से पुलिस ने दबोच लिया। मामले की बारीकी से जांच करने और महत्वपूर्ण सुराग जुटाने के बाद पुलिस ने अदालत में तीनों के खिलाफ चालान पेश किया था जिससे मासूम गुड़िया को न्याय मिल सका।

शातिर है मुजरिम मां और बहन

मुजरिम मां बसंती और बहन चंचल।

मामले में सबूत मिटाने और अपराध में मदद करने के आरोप में दोषी घोषित की गई मां और बेटी बेहद शातिर है। चंचल के बारे में चर्चा है कि वह गरीब परिवार की लड़कियों को बेचने का काम करती है। उसके घर में अंजान लोगों का भी अक्सर आना जाना था।

अकेली देखकर खींच लिया था फ्लैट में

आरोपी ने माना कि घटना के समय वह नशे में था। इसलिए दोपहर में फागिंग के दौरान जब उसने गुडिया को अकेले देखा तो पल भर में पूरी योजना बनाकर उसे अपने फ्लैट में अंदर खींच लिया था।

घटना के बाद इलाके में मासूम को तलाशती पुलिस।

जिसके बाद उसने मासूम के साथ बुरा काम किया। इस दौरान जब उसने देखा कि मासूम के बुरी तरह से घायल हो जाने के कारण उसका पकड़ा जाना तय है तो उसने गुडिया का गला दबा दिया। अतुल के पाप की जानकारी लगने पर मां-बेटी ने रात में अतुल के साथ मिलकर शव ठिकाने लगाने की योजना बनाई लेकिन पुलिस के सक्रिय हो जाने से तीनों ने लाश को पानी की टंकी में छुपा दिया था।

खून बहने से हुई मौत

घटना के बाद सड़कों पर जमा भीड़।

जांच में सामने आया कि वहशी अतुल ने बेहद पाश्विक तरीके से मासूम के साथ दुराचार किया था। घटना के बाद मासूम के प्राइवेट पार्ट से बह रहे खून को देखकर अतुल डर गया जिससे उसने पकड़े जाने के डर से मासूम का गला दबाकर उसे चादर में लपेट कर पलंग के नीचे सरका दिया। पीएम में साफ हुआ कि इस दौरान मासूम जिंदा थी लेकिन उसके प्राइवेट पार्ट से लगातार बहे खून के चलते उसकी मौत हो गई।